सरकार द्वारा पेश लोकपाल बिल की प्रतियां जलाकर विरोध किया

भ्रष्टाचार मुक्त समाज निर्माण के उद्देश्य को लेकर क्रांतिकारी आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश पिछले 30 वर्षों से लगातार अपने साथियों के सहयोग से भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्ष कर रहे है। अपनी ओजस्वी व तेजस्वी वाणी से देश के लाखो करोंड़ों लोगों को भ्रष्टाचार मुक्त समाज निर्माण का संकल्प दिलवा चुके स्वामी अग्निवेश जन लोकपाल बिल को संसद में पास करवाने का दृढ़ संकल्प लेकर अन्ना हजारे, श्री अरविन्द केजरीवार, श्री शान्ति भूषण, श्री प्रशान्त भूषण, श्री संतोष हेगड़े और सुश्री किरण बेदी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सरकार से अहिंसात्मक संघर्ष करते हुए सरकार से यह तो मनवा चुके कि जन लोकपाल बिल के मसौदे को तैयार करने में सिविल सोसायटी भी सरकार के प्रतिनिधियों के साथ बिल ड्राफ्टिंग में बैठेंगी, किन्तु सरकार ने 4 अगस्त, 2011 को संसद में सरकारी लोकपाल बिल को पेश करते हुए सिविल सोसायटी द्वारा जनलोकपाल बिल में प्रस्तावित प्रस्ताव को नजर अंदाज कर दिया। संसद में पेश किये गये सरकारी लोकपाल बिल को देखते ही सिविल सोसायटी के सभी प्रतिनिधियों ने इसका पुरजोर विरोध किया।

कौशाम्बी/गाजीयाबाद में स्वामी अग्निवेश ने श्री अरविन्द केजरीवार, श्री प्रशान्त भूषण और सुश्री किरण बेदी के साथ सरकार द्वारा पेश लोकपाल बिल की प्रतियां जलाकर विरोध किया तथा 16 अगस्त, 2011 को प्रस्तावित अनशन करने की चेतावनी देते कहां कि यदि हमें अनशन से रोका गया तो हम सब जेल भरों आन्दोलन करेगें।

इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश जी ने कहां कि प्रधानमंत्री ने पूर्व में तो स्वीकार किया था कि इस पद को भी लोकपाल विधेयक के दायरे में आना चाहिए। लेकिन अब वे बाहर कर दिये गए हैं। आज मिडिया के माध्यम से पूरे देश के लोगों ने देखा है कि किस प्रकार सरकारी लोकपाल बिल पेश करके सरकार जनता को धोखा दे रही है। जनता मालिक है और सरकार नौकर है किन्तु आज विपरीत परिस्थितियां बन गई हैं सरकार मालिक होने का दावा कर रही है। जनता के साथ जोर जबरदस्ती की जा रही है और जो सरकारी लोकपाल बिल जनता नही चाहती है उसे पूरी जबरदस्ती से संसद में पेश कर दिया गया है। जनता अब चुप नही रहेगी, विरोध करेगी। 16 अगस्त, 2011 से देश की आजादी की दूसरी लड़ाई लड़ी जायेगी और इस अहिंसात्मक लड़ाई में देश के वीर साहसी व पराक्रमी बच्चें, महिलाएं, युवा एवं आम जनता भाग लेंगी क्योंकि आम जनता के साथ सबसे बड़ा धोखा यह हुआ है कि जिन निचले स्तर के सरकारी अधिकारियों के भ्रष्टाचार से आम जनता परेशान रहती है, उन्हें सरकारी लोकपाल बिल के दायरे से बाहर रखा गया है।

Kiran Bedi, Swami Agnivesh and Arvind Kejriwal burn copies of the lokpal bill in Ghaziabad on Thursday. RAJESH KUMAR / HT PHOTO

इसी प्रकार जन्तर मन्तर पर 4 अगस्त, 2011 की शाम को राष्ट्रीय जनान्दोलनों तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ताओं एवं इण्डिया अगेन्स्ट करप्शन के समर्थकों ने सरकार द्वारा पेश लोकपाल बिल की प्रतियां जलाकर सरकारी लोकपाल धोखा है-धक्का मारों मोका है नारा लगाते हुए विरोध प्रदर्शन किया।